संगीत में प्रयोगात्मक एवं विकासात्मक शोध की आवश्यकता

डॉ. कीर्ति श्रीवास्तव
विभागाध्यक्ष संगीत विभाग,
माता गुजरी महिला महाविद्यालय
स्वशासी, जबलपुर (म.प्र)

सार –

अन्य व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक विषयों की तरह संगीत में भी विशिष्ट योग्यता एवं अभ्यास की आवश्यकता होती है। संगीत अध्यापन एवं शिक्षण के दौरान अनेक समस्याओं का हल ढूँढना पड़ता है। इसके लिए सर्वप्रथम संगीत जानकार को समस्याओं की अनुभूति करना एवं उसे समझना पहला कदम है। उसके बाद समस्या का हल ढूंढ कर तथ्यों को प्रमाणिक रूप देना अनुसन्धान कहलाता है। चूँकि संगीत का क्रियात्मक एवं शास्त्रात्मक दोनों ही पक्ष महत्वपूर्ण है अतः इसके विभिन्न आयामों में शोध की संभावनाएं बहुत अधिक हैं। संगीत शिक्षण के दौरान इस प्रकार के अनुसंधानों से शिक्षक और शिष्य दोनों ही लाभान्वित होते हैं, जिससे शिक्षण पद्धति में भी अभीष्ट प्रभावोत्पादकता लाई जा सकती है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य को उच्चतर, गंभीर और महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है, इसलिए किसी भी शोधार्थी या अनुसंधानकर्ता को शोध के परिणामों पर गहनता से विचार करना चाहिये। शोध ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा समाज, संस्कृति एवं मानव का यथोचित विकास होता है एवं मानव अपने जीवन की उपलब्धियों को प्राप्त करता है।

संकेत शब्द – शोध एवं शोधार्थी, क्रियात्मक, शास्त्रात्मक, आयाम,

प्रस्तावना –

संगीत सिर्फ एक ध्वनि नहीं है, बल्कि मन में उठते भावों को व्यक्त करने का प्रबल साधन है। संगीत सामाजिक, धार्मिक एवं दार्शनिक रूप से हमसे धुला–मिला है। संगीत हमारे प्रतिदिन के भोजन में नमक के सामान है, जैसे भोजन में नमक का अपना महत्त्व है वैसे ही जीवन के हर पड़ाव में संगीत हमारे साथ होता है। प्राचीन ग्रंथों में संगीत की महत्ता के उल्लेख मिलते हैं। संगीत में निहित बारीकियों को आज तक जो कुछ भी हम समझ पाए हैं वो निःसंदेह शोध का ही तो परिणाम है। संगीत के विभिन्न आयामों में शोध की प्रबल संभावनाएं हैं। भारत में संगीत विषयक शोध कार्य सादियों से होता आया है एवं जो विद्वान इस कार्य में लगे थे उन्होंने शोध ग्रन्थ भी लिखे थे जो आज के संगीत विद्यार्थियों हेतु वरदान हैं। आज के युग में शोध का महत्व बहुत बढ़ गया है। किसी भी प्रकार के संस्थान (सरकारी, गैर सरकारी, निजी), कारखाने, कम्पनी हों उनमें एक अनुसन्धान विभाग अवश्य होता है जहाँ शोध समिति द्वारा नए प्रयोग कर कार्यों एवं उत्पादन में गुणवत्ता और

सुधार हेतु शोध किये जाते हैं। अनुसन्धान का लाभ नए निर्माण के साथ ही नए अविष्कारों के रूप में भी होता है। शोध वैज्ञानिक एक दिशा में कार्य करते हुए कभी–कभी अन्य क्षेत्र में पहुँच जाते हैं एवं नई कल्पनाएं साकार रूप ले लेती हैं।

भौतिक शास्त्र नोबेल पुरस्कार विजेता प्रसिद्द वैज्ञानिक सी. वी. रमन भौतिक विज्ञान में शोध करते–करते ध्वनि विज्ञान (A c o u s t i c s) विषय में प्रवेश कर गए। इसका नतीजा यह हुआ कि भारतीय संगीत में वाद्यों के ध्वनिक गुणों की जानकारी संगीत मर्मज्ञों को प्राप्त हुई एवं इस दिशा में नवीन प्रयोग होना प्रारम्भ हो गए। शोधकर्ता जब किसी एक विषय पर शोध प्रारम्भ करता है तब उसकी तह तक जाते–जाते अनेक शाखाऐं एवं उपशाखाऐं बनती जाती हैं जो किसी भी दृष्टिकोण से निरर्थक नहीं होती, जबकि वे हमें नया लक्ष्य प्रदान करती हैं जिससे नई खोज की जा सके।

एक विधिवत प्रक्रिया द्वारा किसी समस्या का समाधान प्राप्त करना ही अनुसन्धान या खोज कहलाता है। प्रयोगात्मक या क्रियात्मक एवं सैद्धांतिक या शास्त्रोक्त अनुसन्धान पर विचार किया जाए तो परंपरागत अनुसन्धान से ये दोनों प्रकार के शोध भिन्न है। परंपरागत अनुसन्धान का उद्देश्य चरम सत्यों की खोज है, इसमें समस्या का क्षेत्र व्यापक होता है, जबकि प्रयोगात्मक शोध का उद्देश्य कार्य पद्धति में संशोधन एवं प्रभावशीलता लाना है। इसमें परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ रूपरेखा में परिवर्तन वांछनीय है। सामान्यतः संगीत एक क्रियात्मक विषय है, लेकिन संगीत का सैद्धांतिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना क्रियात्मक पक्ष। इस विषय में शोध की संभावनाएं अत्यंत व्यापक हैं। आवश्यकता है ऐसे अनुसंधानों की जिसमें संगीत का विकास परिलक्षित हो इसके लिए कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है।

संगीत में शोध का क्षेत्र –

गायन, वादन एवं नर्तन तीनों ही संगीत विषय के अंतर्गत आते हैं। एक शोधार्थी को सर्प्रथम तीनों क्षेत्रों में से एक क्षेत्र को चुनकर विषय चयन हेतु अग्रसर होना चाहिए, फिर इन क्षेत्रों के क्रियात्मक पक्ष एवं सैद्धांतिक पक्ष में से किसी एक पक्ष पर ध्यान केंद्रित कर उचित शीर्षक का चुनाव करना चाहिये। शीर्षक चुनने के बाद उस क्षेत्र से सम्बंधित समस्याओं एवं उसके नियंत्रण पर कार्य किया जाना है या किसी नई दिशा में कार्य को प्रगति देनी है यह विचार कर आगे बढ़ना चाहिए। शोध से प्राप्त होने वाले परिणामों पर पूर्व में ही विचार कर शोध की उपयोगिता एवं लाभ को मुख्यता देनी चाहिए। क्षेत्र का चुनाव मुख्य प्रक्रिया है।

संगीत सम्बन्धी विभिन्न आयाम–

संगीत में क्षेत्र के चुनाव के बाद और शीर्षक पर अंतिम निर्णय के पहले संगीत के विभिन्न आयामों पर चर्चा की जानी आवश्यक है। क्रियात्मक पक्ष में अपने शोध की दिशा में ऐसे विषय का चयन किया जाना चाहिए जिससे ज्ञान वृद्धि हो, समाज के लिए सहायक हो तथा प्रभावशाली भी हो। संगीत के विभिन्न क्षेत्र जैसे रागों में बंदिशों का स्वरुप, रस, छंद, ताल, नवीन रागों एवं तालों का निर्माण, वाद्यों के नवीन प्रयोग, चिकित्सा, ऋतुओं से संगीत का सम्बन्ध आदि कई आयामों पर शोध किया जा सकता है। ऐसे ही संगीत का सैद्धांतिक पक्ष या शास्त्र पक्ष भी अति वृहद् है। इतिहास, घराना का विकास, सौंदर्य शास्त्र, वाद्यों का तकनीकी पक्ष, संगीत का अन्य ललित कलाओं से अन्तर्सम्बन्ध, संगीत ग्रंथों की टीकाएं, लोक संगीत, सुगम संगीत की विधाओं का विश्लेषण, प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा बताये गए प्राचीन तथ्यों का नवीनीकरण या पुनरावलोकन, पारम्परिक लोक नृत्य, विभिन्न नृत्य शैलियाँ, फिल्म संगीत– तकनीक, निर्माण, निर्देशन, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत पद्धतियों की तुलना एवं प्राचीन शास्त्रों का वर्तमान में महत्व आदि विभिन्न विवेचन किये जा सकते हैं। संगीत चिकित्सा ऐसा विषय है जिस ओर प्रयास कुछ कम ही किये जा रहे हैं। संगीत से चिकित्सा को अपनाने के किये आमजन में इसकी जागरूकता हेतु विभिन्न प्रयोगों द्वारा इसे साबित करने की महती आवश्यकता है। देश एवं विदेश में अनेक वर्षों से इस पद्धति को स्वीकारा जा चुका है पर प्रचार–प्रसार की कमी एवं इस ओर लगातार कार्य न किये जाने के कारण यह पद्धति आज भी अप्रचलित है। लिखा तो बहुत कुछ जा रहा है पर उसे प्रयोग में लाने की कमी हम संगीत जानकारों में भी नहीं है। हमारे देश में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति प्राचीन कालीन होते हुए भी आज एलोपैथी चिकित्सा पद्धति के आगे कमतर हो गयी है। होमियोपैथी चिकित्सा को भी धीरे–धीरे हमने अपना लिया है, वैसे ही संगीत चिकित्सा पद्धति को भी विभिन्न प्रयोगों द्वारा आम जान में प्रचलित करने का काम भी हमारा है। संगीत सर्वप्रथम हमारे मन मस्तिष्क पर ही प्रभाव डालता है तो यह चिकित्सा निश्चित रूप से कारगर साबित हो सकती है अगर विकासात्मक दृष्टि अपनाई जाए। संगीत के शैक्षणिक पक्ष पर भी अनुसन्धान की अत्यंत आवश्यकता है जिसे नाकारा नहीं जा सकता। अनुसन्धान निरंतर चलने की प्रक्रिया है एवं जीवन पर्यन्त शोध किये जा सकते हैं। ऐसे शोध को महत्व दिया जाना चाहिये जो मौलिक, प्रामाणिक, तार्किक और उपयोगी हों। विवादास्पद विषयों चयन से बचना चाहिए। इन सभी महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान केंद्रित कर विषय चयन रूचि अनुरूप भी होना चाहिए। शोध के उद्देश्य की स्पष्टता के साथ शोध का सीमांकन भी हो जिससे नियत अवधि में कार्य संपन्न हो सके।

भाषा चयन–

शोध ग्रन्थ की भाषा का चयन भी अत्यंत आवश्यक अंग है। शोध की भाषा सरल, सुगम, स्पष्ट, परिशुद्ध होने के साथ नियंत्रित और प्रभावोत्पादक होनी चाहिए। जिस भाषा पर शोधार्थी का पूर्ण नियंत्रण है उसे उसी भाषा का चयन करना चाहिए।

तथ्यों एवं सामग्री का संकलन –

तथ्यों एवं सामग्री संकलन हेतु ग्रन्थ, पुस्तकें, विषय विशेषज्ञों के साक्षात्कार, पूर्व शोधकर्ताओं के अनुभव, भ्रमण, प्रश्नावलियों, पत्र–पत्रिकाओं आदि की सहायता लेनी चाहिए। साक्षात्कार में किसी विद्वान् से भेंटवार्ता द्वारा अपने विषय से सम्बंधित प्रश्नों का उत्तर या स्पष्टीकरण प्राप्त होता है। साक्षात् प्रश्नों के द्वारा प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु यह प्रक्रिया उपयोगी है। प्रश्नावली का क्षेत्र सीमित एवं असीमित दोनों प्रकार का होता है। सीमित प्रश्नों के उत्तर देना बहुत आसान होता है जबकि असीमित क्षेत्रों के प्रश्न के उत्तर कठिन हो जाते हैं। निरर्थक संकलन नहीं किया जाना चाहिए।

शोध निर्देशक का चुनाव–

संगीत विषय के अंतर्गत जिन क्षेत्रों में कार्य किया जा सकता है उन क्षेत्रों के जानकार शोध निर्देशक का चुनाव एक कठिन कार्य है। पहले तो संगीत विषय के अंतर्गत निर्देशकों की कमी है एवं जो हैं वे अपने कार्य क्षेत्र एवं सुविधा के अनुसार शोधार्थी को विषय चयन की सलाह देते हैं। जबकि शोधार्थी की क्षमता को देखते हुए उसे क्षेत्र एवं विषय का चयन करने देना चाहिए। निर्देशक को समय–समय पर शोध के सभी आयामों पर चर्चा के दौरान शोधार्थी का ज्ञानवर्धन करना चाहिए। कुछ वर्षों पूर्व यह समस्या थी कि संगीत के प्रयोगात्मक पक्ष के निर्देशकों की ही संख्या अधिक थी तो इस कारण सैद्धांतिक पक्ष के शोध कार्यों में कमी आने लगी। जिससे योग्य, परिश्रमी और उत्साही शोधार्थी एवं शोध प्रबंधों में रुकावटें आना स्वाभाविक हो गया। वर्तमान समय में शोधार्थी अधिक हैं एवं निर्देशक कम। शोधार्थी भी गुणवत्तापूर्ण शोध नहीं कर रहे हैं। केवल डिग्री पाने हेतु अनुसन्धान किसी को लाभ नहीं पहुंचा सकता।

शोधार्थी हेतु आर्थिक सहायता–

शोध कार्य के दौरान शोध व्यय का क्षेत्र बहुत बड़ा होता है। इस हेतु अनेक अनुदान योजनाओं (सरकारी, गैरसरकारी) के प्रति विद्यार्थी को जागरूक होना चाहिए।भारत में अनेक स्कालरशिप इस हेतु प्रदान की जाती हैं। विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने और अनुसन्धान के लिए भी स्कॉलर्शिप का प्रावधान है जो पूरी तरह से वित्त पोषित होती हैं। इनमें एक अड़चन है कि जो योजनाएं चलाई तो जा रही हैं पर उनमें से अधिकतर योग्य और जरूरतमंद विद्यार्थी इसका लाभ नहीं ले पाते, अयोग्य विद्यार्थी को इन योजनाओं का लाभ मिल जाता है जो मिलने वाली राशि को अन्यत्र कार्यों में खर्च कर देते हैं। शोध की गुणवत्ता, विकास एवं विद्यार्थी

के उज्जवल भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि इन योजनाओं को प्रदान करने हेतु नियमावली में फेरबदल किया जाये जिससे योग्य, परिश्रमी शोधार्थी को इनका लाभ प्राप्त हो सके।

संगीत में शोध का महत्त्व एवं आवश्यकता –

शोध ऐसी प्रक्रिया है जिसका प्रत्येक परिणाम नई दिशा एवं नई उपलब्धि से हमें अवगत कराता है। प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति की खोज ने मध्यकालीन सभ्यता एवं संस्कृति का विकास किया एवं मध्य कालीन परम्पराओं एवं रीतियों के आधार पर आधुनिक सभ्यता एवं संस्कृति विकसित हुई। आज हम जिन परम्पराओं संस्कृति एवं रीति रिवाजों का निर्वहन कर रहे हैं वो दरसल हमारे पूर्वजों द्वारा वर्षो किये गये अध्ययन, विकसित सोच एवं अनुसन्धान का ही परिणाम है। हिंदुस्तानी संगीत को जाग्रत करने वाले पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी ने संगीत कला को एक विषय के रूप में विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अन्य विषयों के समक्ष खड़ा करके इस विषय में शोधात्मक सम्भावनाओ को प्रमाणित किया। आज हम संगीत विद्यार्थी जिस संगीत का रसास्वादन करते हैं वो कहीं न कहीं अनेक अनुसंधानों के बाद प्राप्त विधा है और इस क्षेत्र में निरंतर शोध की आवश्यकता है।

निष्कर्ष–

संगीत कला की विभिन्न विधाओं की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए अनुसंधानकर्ता, निर्देशकों, विद्वानों, शास्त्रकारों, चिंतनशील लोगों को अनुसन्धान के क्षेत्र में संगीत कला का योगदान सिद्ध करना होगा। इतिहास के विभिन्न पड़ावों में संगीत कला में भी बड़े बदलाव परिलक्षित होते हैं। संगीत के शिक्षण की बात की जाये तो गुरुकुल शिक्षण प्रणाली एवं घरानो की बंदिशों से मुक्त होकर संगीत अब आम जन के शिक्षण के लिए सहज हो गया। शैक्षणिक संस्थाओं में विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक संगीत को एक विषय के रूप में अपनाकर सार्थक पहल की गई। संगीत में अनुसन्धान को भी अपनाया गया। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य एक उच्चतम, गंभीर एवं महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाता है, जिसके माध्यम से समाज संस्कृति एवं मानव का यथोचित विकास होता है एवं मानव अपने जीवन भी उपलब्धियों को प्राप्त करता है। यह सर्वमान्य सत्य है की संगीत मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक है अतः इस विषय में शोध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. भारतीय संगीत में अनुसन्धान की समस्याएं– 2004 – संजय प्रकाशन, दिल्ली

2. शास्त्रीय संगीत शिक्षा – समस्याएं एवं समाधान– 2000 – आदित्य पब्लिशर्स, बीना(मप्र)
3. संगीत में अनुसन्धान की समस्याएं और क्षेत्र– 1988 – कृष्णा बदर्स, अजमेर
4. संगीतायन– 2003 – राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
5. संगीत मासिक पत्रिका – हाथरस प्रकाशन, हाथरस